इकाई 8 उपनिवेशों की स्वतंत्रता और विकासशील विश्व में राज्य

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 उपनिवेशों की स्वतंत्रता और उपनिवेश विरोधी संघर्ष

8.3 उपनिवेशों की स्वतंत्रता की प्रक्रिया

8.3.1 लैटिन अमेरिका

8.3.2 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशों की स्वतंत्रता

8.3.3 दक्षिण अफ्रीका

8.4 विकासशील देशों में राज्य

8.4.1 विकासशील देशों में राज्य की विशेषताएं

8.4.2 अति–विकसित राज्य

8.4.3 स्वायत्तता

8.4.4 महानगर का नियंत्रण

8.5 सारांश

8.6 संदर्भ

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता आधुनिक विश्व इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण प्रकरणों में से एक है, जिसने दुनिया के राजनीतिक मानचित्र को प्रमुखता से परिवर्तित कर दिया। परन्तु सदियों के दीर्घकालीन औपनिवेशिक शासन ने नए उभरते हुए राष्ट्रों को प्रभावित किया, जिसमें अन्य चीजों के अलावा उनकी राजनीतिक प्रक्रियाओं पर गहरी छाप डाली। इस इकाई में, हम उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता की प्रक्रिया एवं उपनिवेशवाद के पश्चात् अथवा विकासशील दुनिया में राज्य को समझने पर अलग–अलग दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपको निम्न बिंदुओं को करने में सक्षम होना चाहिए–

- उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता के मुख्य कारणों की पहचान करें।
- उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों की प्रकृति और प्रतिरूप (पैटर्न) की पहचान करें।
- विकासशील देशों में राज्यों को समझने के लिए सिद्धांतिक ढ़ांचों का वर्णन करें।
- उत्तर–औपनिवेशिक काल में देशों में राज्यों की विशेषताओं को पहचानें।

8.1 परिचय

उपनिवेशवाद विश्व के राजनीतिक क्षितिज पर तब दिखाई दिया जब यूरोपीय देशों ने मुख्य रूप से स्पेन और पुर्तगाल ने तथा बाद में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड आदि जैसे अन्य यूरोपीय देशों ने एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका पर अपना साम्राज्य स्थापित करना शुरू किया। यूरोपीय शक्तियों ने तीसरी दुनिया के देशों के रूप में पहचाने जाने वाले देशों के संसाधनों का दोहन किया और औपनिवेशिक एवं साम्राज्यवादी नीतियों द्वारा लगभग चार शताब्दियों तक वहां के लोगों को अपने अधीन रखा। शोषण ने अनिवार्य रूप से अपने स्वयं के विरोधाभाषों को अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय मुक्ति और लोकतांत्रिक आंदोलनों के रूप में उकसाया।

अंतर–युद्ध की अवधि (19919–1939) के दौरान उपनिवेशों ने उन देशों से उनकी उपनिवेश बनाने के अधिकार पर सवाल उठाए और जिन्होंने तीसरी दुनिया के लोगों पर अत्याचार किए। हालांकि, द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति और संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के बाद, उपनिवेशों की स्वतंत्रता का सिलसिला आरम्भ हुआ, उस समय कई एशियाई, अफ्रीकी और प्रशांत देश संप्रभु स्वतंत्र देशों के रूप में उभरे। इन देशों को तीसरी दुनिया या विकासशील दुनिया के रूप में और हाल के दिनों में राजनीतिक सिद्धांत एवं तुलनात्मक राजनीति में उत्तर–औपनिवेशिक समाज के रूप में वर्णित किया गया है। विकासशील दुनिया की सामान्य विशेषताओं की पहचान करते समय, उनके बीच भिन्नताओं की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। कुछ जैसे अरब देश बहुत अमीर है, जबकि अन्य बांग्लादेश की तरह बहुत गरीब है। कुछ के पास सुदृढ़ लोकतांत्रिक संस्थान है और जबकि कई सत्तावादी या सैन्य शासन के अंतर्गत आते है। तीसरी दुनिया के देशों में आदिवासी समाजो से लेकर पूंजीवादी समाजों तक के सामाजिक निर्माणों के संदर्भ में भी मतभेद है।

इन सभी अंतरों के बावजूद, विकासशील दुनिया हमें उन देशों को एक साथ जोड़ने में मद्द करती है जो औपनिवेशिक वर्चस्व के खिलाफ लड़कर अस्तित्व में आए थे। वे सभी अपनी पृष्ठभूमि के कारण समान समस्याओं का सामना करते हैं। इसलिए तीसरी दुनिया या विकासशील दुनिया में समानताओं और असमानताओं को एक दूसरे को खत्म करने की अतिरंजना के बिना दोनों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन करना उपयोगी है।

यह इकाई आपको नए स्वतंत्र देशों में उपनिवेश से स्वतंत्र होने की प्रक्रिया और राज्य की प्रकृति पर बहस से परिचित कराती है। हालांकि, विभिन्न सैद्धांतिक रूपरेखाएं है जिनमें राज्य को समझा जा सकता है। आप पहले के पाठ्यक्रमो में इनमें से कुछ सिद्धांतों से परिचित हो चुके है। यहां हम आपको उस संदर्भ से परिचित कराते है जिसमें विकासशील देशों में सरकारें कार्य करती है।

8.2 उपनिवेषवाद से स्वतंत्रता

उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता' के पद (टर्म या शब्द) से वर्तमान तात्पर्य का प्रादुर्भाव तब हुआ जब बीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों का अंत हुआ। इस टर्म का उपयोग कालानुक्रमिक काल में द्वितीय विश्व युद्ध के

बाद के वर्षो का उल्लेख करने के लिए किया जाता है, जब राजनीतिक उथल–पुथल ने एशिया, अफ्रीका और प्रशांत क्षेत्र में लगभग सौ नए राष्ट्र राज्यों की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई।

यह 'उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता' का टर्म उपनिवेशवाद के सभी रूपों को समाप्त करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, न कि केवल प्रत्यक्ष राजनीतिक नियंत्रण को। 'उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता' के इस आयाम ने तब प्रमुखता हासिल की जब घाना के क्वामे नेक्रमा ने आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक और अन्य अनौपचारिक साधनों के माध्यम से पूर्व उपनिवेशवादी सत्ता की निरंतरता को उजागर करने के लिए 'नव–उपनिवेशवाद' शब्द गढ़ा।

'तीसरी दुनिया' में वे देश शामिल थे, जिनमें से अधिकांश ने पूंजीवादी अर्थात प्रथम दुनिया या समाजवादी अर्थात द्वितीय दुनिया के प्रकार की श्रेणी के साथ गठबंधन करने से इंकार कर दिया। बाद में, इस शब्द ने एक आर्थिक आयाम हासिल कर लिया तथा इसे विकासशील देशों(तीसरी दुनिया) द्वारा उत्पादित की जाने वाली प्राथमिक वस्तुओं को और प्रथम दुनिया की विकसित निजी अर्थव्यवस्थाओ और दूसरी दुनिया की केंद्र–नियोजित अर्थव्यवस्थाओं से अलग करने के इस्तेमाल किया गया था।

1990 के दशक के बाद से, 'उत्तर–उपनिवेशवाद' शब्द का लोकप्रिय तरीके से इस्तेमाल दुनिया में पश्चिमी विचारों की सार्वभौमिकता के बहाने एक विशिष्ट राजनीतिक आवाज देने के लिए किया गया, जिसका विशेष रूप से उदारवाद और समाजवाद द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

हाल के वर्षो में, वैश्विक दक्षिण शब्द का उपयोग देशों के उसी एक समूह को संदर्भित करने के लिए किया जा रहा है क्योंकि इस शब्द को 'तीसरी दुनिया' के लिए अधिक खुला और मूल्य मुक्त विकल्प के रूप में देखा जाता है तथा इसी तरह विकासशील देशों की तरह संभावित रूप से 'मूल्य निर्धारण' शब्द का उपयोग किया जाता है।

यूरोपीय साम्राज्यों का टूटना अथवा एशिया, अफ्रीका और प्रशांत क्षेत्र के देशों मे स्वतंत्रता की प्रक्रिया का आरम्भ होना, मुख्यतः बढ़ते राष्ट्रवाद और पश्चिमी उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवादी वर्चस्व के खिलाफ विद्रोह का परिणाम थी। कई उपनिवेशों में, औपनिवेशिक या विदेशी शासन के खिलाफ विरोध कब्जे के शुरूआत के समय से ही अस्तित्व में था। हालांकि, उपनिवेशवाद के खिलाफ आंदोलनों ने वास्तव में तब ताकत एकत्र की जब उपनिवेशों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ। पश्चिमी मुल्यों और संस्थानों ने अनिवार्य रूप से इन उपनिवेशों में प्रवेश किया, एवं उनके सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था में मौलिक परिवर्तन की शुरूआत की, इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रवाद के उदय और विकास के मार्ग का प्रशस्त किया। हालांकि, पहले और दूसरे विश्व युद्ध के बीच के दशकों में, उपनिवेशवाद पर हमले ने राष्ट्रीय आंदोलनों के रूप में गति पकड़ी। पश्चिमी दुनिया के पूरे पूर्वी सीमांत पर, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया के माध्यम से मोरक्को से दक्षिण पूर्व एशिया तक वृहत प्रभाव क्षेत्र में लोगों ने स्वयं को साम्राज्यवादी वर्चस्व से छुटकारा दिलाया। यही कारण है कि राष्ट्रवादी आंदोलनों के वृहत उत्थान की प्रभावी शुरूआत के संकेत के रूप में प्रथम विश्व युद्ध के अतं को माना गया था, जो कि 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सफलता पर पहुंचा। मोरक्को में, अब्द अल–क्रिम ने स्पेनिश और फ्रांसीसीयों को

चुनौती दी, मिस्र में साद ज़गहलुल पाशा ने अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रवादियों का नेतृत्व किया, और सीरिया में फ्रांसीसी बलात् शासन को गिराने के लिए विद्रोह हुआ। तुर्की, ईरान और अफगानिस्तान ने क्रांतिकारी नेताओं के उदय को देखा, जिन्होंने तानाशाही के आड़ में अपने देशों के आधुनिकीकरण के मसौदे को मनाने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया। इनमें से अब तक का सबसे अद्भुत और सफल मुस्तफा कमाल था, कालदोष–युक्त आटोनियन साम्राज्य के फंदे को त्यागकर तुर्की को शांति और अपमान की संधि से बचाया, इसे एक राष्ट्र राज्य के रूप में समेकित किया एवं इसे अपने आधुनिकता के पथ पर प्रशस्त करने की शुरूआत की। यूरोप से सबसे पहले हटाए जाने के बाद, चीनी क्रांतिकारी आंदोलन धीरे–धीरे पेचीदा अभियानों और युद्ध के गठजोड़ से उभरा, एवं कुओमितांग चीनी राष्ट्रवाद का प्रमुख अवतार बन गया क्योंकि चियांग काई–शेक ने शक्ति के लिए गैर–न्यायिक कम्यूनिष्ट आदेश का तिरष्कार किया।

उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षो के दो मुख्य प्रतिरूप (पैटर्न) थे। कुछ उपनिवेशों में, संघर्ष अपने औपनिवेशिक आकाओं के खिलाफ था, और मौजूदा सामाजिक–आर्थिक व्यवस्थाओं के खिलाफ नहीं। जहाँ संघर्ष केवल शासकों के खिलाफ थे और व्यवस्था के खिलाफ वहां मकसद था कि राजनीतिक शक्ति औपनिवेशिक आकाओं के हाथ से निकलकर औपनिवेशिक देशों के लोगों के पास हस्तांतरित हो जाएं। इन संघर्षो को 'स्वतंत्रता आंदोलनों' के रूप में वर्णित किया गया था, जो केवल संबंधित देशों के लोगों के हाथों में राजनीतिक शक्ति के हस्तांतरण की मांग करते थे। हालांकि, जहां न केवल विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई थी, बल्कि मौजूदा सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ भी थी, जो व्यवस्था अन्यायपूर्ण, अलोकतांत्रिक और शोषण की समर्थक थी, इन संघर्षो को 'मुक्ति आंदालनों' या 'मुक्ति संघर्षो' के रूप में जाना जाता था।

मार्क्सवाद की अपील

अक्टूबर 1917 में रूस में क्रांतिकारियों और उनकी कम्युनिष्ट पार्टी के एक समूह द्वारा ज़ार के निरंकुश शासन को उखाड़ फेंकने से स्पष्ट संदेश गया कि यूरोपीय साम्राज्यवाद और उनके स्थानीय प्रतिनिधियों का संयुक्त उत्पीड़न बल अजेय नहीं है। मार्क्सवाद की अपील इतनी मजबूत हुई कि शायद ही कोई उपनिवेश था जिसमें बुद्धिजीवियों ने साम्यवाद या अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन में सहभागिता न की हो। रूस में नए नेतृत्व ने स्वतंत्रता प्राप्त करने और उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए सघंर्षो का समर्थन किया। इसने उपनिवेशों में राष्ट्रवादी आंदोलनों को प्रोत्साहित किया और वे उत्तरोत्तर उस समाजवादी धड़े की ओर बढ़ गए जिसमें उन्होंने एक सहानुभूति रखने वाले एवं एक तारणहार को देखा।

8.3 उपनिवेशों की स्वतंत्रता की प्रक्रिया

उपनिवेशों की स्वतंत्रता' शब्द समूह से यह धारणा बनी कि स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रक्रिया शांतिपूर्ण थी। उपनिवेशवाद स्वयं में एक हिसंक प्रक्रिया थी जिसमे औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा छल, युद्ध और साधारण घोषणाओं से राज्यों पर आधिपत्य स्थापित करना शामिल था। उपनिवेशों की स्वतंत्रता लोगों द्वारा विभिन्न रूपों में संघर्ष से जीती गई थी। कुछ देशों में यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण थी जैसे कि अफ्रीका के कुछ फ्रांसीसी उपनिवेशों में उदाहरणार्थ

सेनेगल, पश्चिमी अफ्रीका में आइवरी कोस्ट एवं कुछ ब्रिटिश उपनिवेशों जैसे नाइजीरिया, घाना आदि में।

कुछ देशों ने अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे राष्ट्र संघ और संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की। राष्ट्र संघ के अधीन शासित क्षेत्र जैसे सीरिया, फिलिस्तीन, लेबनान, इराक, तंजानिया, रंवाडा, बुरूंडी, कैमरून, प्रशांत क्षेत्र आदि या तो स्वतंत्र हो गए या उन्हें संयुक्त राष्ट्र की ट्रस्टीशिप काउंसिल के अधीन रखा गया। इन संगठनों का उद्देश्य इन क्षेत्रों को स्व–निर्णय और अंततः स्वतंत्रता के लिए नेतृत्व करना था। उनमें से अधिकांश ने स्वतंत्रता प्राप्त की, दक्षिण पश्चिम अफ्रीका (अब नामीबिया) को छोड़कर जो दक्षिण अफ्रीका के ट्रस्टीशिप के अंतर्गत था और जिसने रंगभेद की नीति को आगे बढ़ाया। पुर्तगाल ने अफ्रीकी उपनिवेशों में–अंगोला, मोजाम्बिक, गिनी बिसाऊ में एक लंबा सशस्त्र संघर्ष देखा और वे 1974 तक स्वतंत्र नहीं हो सके, तत्पश्चात जब पुर्तगाल ने स्वयं लोकतांत्रिक क्रांति देखी, जिसने सैन्य तानाशाह साल्ज़र को उखाड़ फेंका।

अल्जीरिया के पूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश को भी 1954 से 1961 तक यानि सात वर्षो तक सशस्त्र संघर्ष करना पड़ा, जबकि मोरक्को और ट्यूनीशिया ने तुलनात्मक सहजता के साथ स्वतंत्रता प्राप्त की। अल्जीरिया ने अपनी स्वतंत्रता की शुरूआत की तो फ्रांसीसी उपनिवेशवादियो ने विरोध किया जिसके परिणामस्वरूप नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ अल्जीरिया(एफएनएलए) के बेन बेला और फेरहत अब्बास के नेतृत्व में एक हिसंक संघर्ष हुआ।

8.3.1 लैटिन अमेरिका

लैटिन अमेरिका में, अफ्रीकी और एशियाई उपनिवेशों से बहुत पहले स्पेनिश एवं पुर्तगाली उपनिवेशों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त की गई थी। मैक्सिको और अन्य जगहों पर स्पेन के उपनिवेशों में क्रांतिकारी आंदोलनों की शुरूआत हुई तथा वेनेजुएला में स्वतंत्रता के लिए युद्ध का आगाज हुआ 19 वीं शताब्दी के शुरूआत तक अर्जेटीना आदि में भी। 1825 तक क्यूबा और प्यूर्टो रिको को छोड़कर स्पेन ने अपना विशाल साम्राज्य खो दिया।

अग्रेजों के खिलाफ उत्तरी अमेरिकी संघर्ष के कारण तेरह उपनिवेशों ने मिलकर संयुक्त राज्य अमेरिका का सृजन किया, इसके विपरीत स्पेनिश अमेरिकी विद्रोह और स्वतंत्रता के युद्धों ने सत्रह अलग–अलग गणराज्यों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। क्यूबा और प्यूटी रिको में स्पेन का भ्रष्ट शासन तब तक जारी रहा जब तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका स्पेन के खिलाफ क्यूबा आंदोलन में शामिल नहीं हो गया। क्यूबा ने न केवल स्पेन के खिलाफ स्वतंत्रता का क्रांतिकारी युद्ध लड़ा, बल्कि अमेरिकी वर्चस्व के खिलाफ भी संघर्ष किया। अमेरिका ने 1898 में स्पेन को क्यूबा से बाहर निकाल दिया, लेकिन इसके पश्चात अमेरिकी निवेशकों ने इस द्वीप पर अपना प्रभावी स्थान बना लिया, जिसके कारण क्यूबा ने अपने स्वयं के आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण खो दिया।

फिदेल कास्त्रों के नेतृत्व में, क्यूबा ने बतिस्ता के तानाशाही शासन के खिलाफ छापामार लड़ाई लड़ी और दिंसबर 1958 में उन्हें उखाड़ फेंका। बाद में कास्त्रों ने अमेरिकी संपत्ति को जब्त कर लिया, उन्होंने सोवियत संघ से समर्थन मांगा और मार्क्सवाद–लेनिनवाद से प्रेरित शासन की स्थापना की। संयुक्त राज्य

अमेरिका और क्यूबा के बीच वैचारिक संघर्ष शीत युद्ध के युग के बाद आज भी जारी है।

स्पेन और पुर्तगाल ने लैटिन अमेरिका में अपने साम्राज्य को फिर से स्थापित करने का प्रयास किया। हांलाकि, 1823 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने मोनरो सिद्धांत का प्रादुर्भाव किया, जिसके तहत मौजूदा उपनिवेशों की यूरोपीय शक्तियों की अधीनता को मान्यता देते हुए, भविष्य में किसी भी यूरोपीय शक्ति द्वारा उपनिवेश बनाने को अनुमति देने से इंकार कर दिया। यह वास्तव में, लैटिन अमेरिका में अपने स्वयं के हितों को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटीश और अमेरिका की पैंतरेबाजी का एक हिस्सा था।

8.3.2 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशों की स्वतंत्रता

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशो की स्वतंत्रता की प्रक्रिया तेज हो गई थी। फ्रेच भारत–चीन, डच इंडोनेशियाई ब्रिटीश मलाया और इतावली पूर्वी अफ्रीका जैसे कुछ औपनिवेशिक क्षेत्रों पर शत्रुओं ने कब्जा कर लिया था और वे वस्तुतः औपनिवेशिक नियंत्रण से कट गए थे। दक्षिण पूर्व एशिया पर जापानी कब्जे ने राष्ट्रवादी भावनाओं और पश्चिमी औपनिवेशिकवादियों को क्षेत्र से बाहर निकालने को प्रोत्साहन दिया, जिसके तहत उन्हें औपनिवेशिक प्रशासन में रणनीतिक पदों से हटाया और उनमें से अधिकांश पदों पर मूल निवासियों को बैठाया। अंत्तोगत्वा, अति अधिनायकवादी और दमनकारी जापानियो के पतन ने राष्ट्रवादियों को पराजित सेनाओं द्वारा छोड़े गए हथियारों को अपने कब्जे में लेने और उनके संघर्षो को आक्रामकता का अवसर दिया। इस तरीके से इंडोनेशिया और वियतनाम ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। इंडोनेशियाई राष्ट्रवादियों को अपनी स्वतंत्रता हासिल करने के लिए डचों के खिलाफ चार साल तक लंबा संघर्ष करना पड़ा। दोनों मामलों में एक खुला युद्ध औपनिवेशिक सत्ता और राष्ट्रवादी ताकतो के बीच लड़ा गया था। वियतनाम में, वियतमिनों के नेतृत्व में, 1954 के संघर्ष विराम के बाद, फ्रांसीसी देश के उत्तरी भागों से वापस चले गए। दक्षिण में, एक गैर–कम्युनिष्ट सरकार स्थापित की गई थी। बाद में अमेरिकियों ने फ्रांसीसियों को परिवर्तित कर स्वयं को स्थापित कर दिया। अमेरिकी साम्राजयवाद के खिलाफ वियतनामियों द्वारा लंबे समय तक किया गया वीरतापूर्ण संघर्ष अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना थी। द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे दूरगामी ऐतिहासिक परिणाम निस्संदेह यह हुआ कि शीघ्रता से उन्नीसवीं शताब्दी के साम्राज्यों का विघटन और यूरोप का संकुचन हुआ। वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण घटना 1947 में भारत की स्वतंत्रता थी। देश के विभिन्न हिस्सों में ब्रिटीश और स्थानीय जमींदारों के खिलाफ विभिन्न किसान और आदिवासी विद्रोह हुए एवं 1857 कें विद्रोह ने एक राष्ट्रवादी आंदोलन के उदय में योगदान दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने आंदोलन को एक संगठनात्मक अभिव्यक्ति दी। भारतीय राष्ट्रवाद गांधी जी से बहुत प्रभावित था, जिनके सिद्धांत के तत्व अहिंसा और असहयोग थे। गांधी जी के प्रवेश ने आंदोलन को एक जन आंदोलन में परिवर्तित कर दिया। भारत में सत्ता हस्तांतरण की अनुकूल परिस्थितियां समाजवादी उन्मुख लेबर पार्टी की सरकार के ब्रिटेन में सत्ता में आने के उपरांत हुई थी, हांलाकि भारत और पाकिस्तान में देश के अंतर्गत होने वाले विद्रोह को टाला नहीं जा सका। हांलाकि विभाजन शांतिपूर्ण नहीं था, लेकिन इसने संविधान की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

अफ्रीकी उपनिवेशों में, गोल्ड कोस्ट (स्वतंत्रता के बाद घाना) और नाइजीरिया स्वतंत्रता के अग्रदूत बन गए। मार्च 1957 में, तोगोलैंड के ट्रस्ट क्षेत्र के साथ गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल के तहत प्रभुत्व के साथ घाना एक स्वतंत्र राज्य बन गया। नुक्रूमा, इसके प्रधानमंत्री थे, जो अफ्रीकी स्वतंत्रता के चैंपियन और पैन अफ्रीकीवाद के प्रतिपादक थे। नाइजीरिया के महासंघ ने 1960 में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त की।

8.3.3 दक्षिण अफ्रीका

उपनिवेशों की स्वतंत्रता के इतिहास में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया में अफ्रीकी लोगों का संघर्ष विशेष ध्यान देने योग्य है। ऐतिहासिक रूप से, डच पहली बार 1652 में दक्षिण अफ्रीका में में बसे थे जो वर्तमान का केपटाउन है। 19 वीं शताबदी के प्रथम भाग में अग्रेजों के आने और 1806 में केपटाउन में ब्रिटीश औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ अग्रेजो के औपनिवेशिक क्षेत्र में विस्तार हुआ, डच औपनिवेशिक अफ्रीकी लोगों को केपटाउन छोड़कर ऑरेज़ नदी के उत्तर में जाने के लिए मजबूर किया गया– जिसका 1830 के दशक में बड़े पलायन, ग्रेट ट्रैक के रूप में समापन हुआ। इसके परिणामस्वरूप दो स्वंतत्र अफ्रीकी गणराज्यों–ऑरेंज फ्री स्टेट और ट्रांसवाल तथा नए ब्रिटीश उपनिवेश– नॅटाल का गठन हुआ। इनमें से प्रत्येक में केप उपनिवेश के रूप में नस्लीय स्तरीकृत समाज विकसित हुआ जिसमें गोरों का वर्चस्व रहा और अफ्रीकन की स्थिति दासत्व की रही। यद्यपि केप और नॅटाल में अंग्रेजों की घोषित नीति भेदभाव के विरूद्ध थी, परन्तु व्यवहार में संपत्ति की योग्यता ने मताधिकार को काफी हद तक गोरों तक सीमित कर दिया। डच अफ्रीकन गणराज्यों में, अफ्रीकियों को मताधिकार से वंचित कर दिया गया था, जिन्हे ऑरेज फ्री स्टेट में भूमि के स्वामित्व से बेदखल कर दिया गया था और वे गोरों के कब्जे वाले ट्रांसवाल के क्षेत्रों से गुजरने के लिए पास लेकर चलने के लिए बाध्य थे।

19 वी शताब्दी के अंत के पश्चात् किम्बरली में हीरे की और ट्रांसवाल में सोने के बड़े भंडारो की खोज ने, इन क्षेत्रों पर नियंत्रण हेतु डच और अग्रेजों में संघर्ष हुआ, जो अंततः डचो की हार और 1910 में यूनियन ऑफ साउथ अफ्रीका की ओर अग्रसर हुआ। इस यूनियन ने अफ्रीकन रिपब्लिक आफॅ ऑरेज स्टेट, ट्रांसवाल, केप उपनिवेश और नॅटाल को एक साथ लाया। दक्षिण अफ्रीका के संघ ने डोमिनियन का दर्जा प्राप्त किया और बाद में 1934 में ब्रिटीश साम्राज्य के अंतर्गत एक संप्रभु स्वतंत्र राज्य बन गया। 1961 में इसने ग्रेट ब्रिटेन के साथ अपने संबंध तोड़ लिए और एक गणतंत्र बनने के लिए राष्ट्रमंडल छोड़ दिया।

दक्षिण अफ्रीका की नस्लभेदी सरकार के रंगभेदी शासन ने अफ्रीकियों को यहां तक कि मूलभूत बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित कर दिया। ऐसे शासन को कई पश्चिमी सरकारों से समर्थन मिला, जिनकी दक्षिण अफ्रीका में रणनीतिक और आर्थिक रूचि थी। चूंकि अफ्रीकी लोगों के पास कोई कानूनी अधिकार नहीं था और न ही स्वतंत्रता थी, इसलिए शासन का विरोध निषेधित था। जैसे रंगभेद शासन तीव्रता से क्रूर हुआ, अफ्रीकी विपक्ष ने भी उग्रवाद अपनाया। अफ्रीकी प्रतिरोध जो गोरों के विरूद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में शुरू हुआ, अतंतः 1923 में अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस का रूप ले लिया तथा नेल्सन मंडेला इसके नेता के रूप में उभरे। उन्हें 1963 में रिवोनिया सुनवाई के बाद आजीवन

कारावास की सजा सुनाई गई। तीसरी दुनिया के देशों और गुट–निरपेक्ष आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय मंचो पर दक्षिण अफ्रीकी मकसद का समर्थन किया। 1980 और 1990 के दशक में संयुक्त राष्ट्र के भीतर और विकासशील दुनिया से बढते अंतराष्ट्रीय दबाव ने पश्चिमी देशों को अफ्रीकी देशों की कुछ मांगों को मानने के लिए मजबूर कर दिया। इसने रंगभेद शासन को अफ्रीकी विपक्ष के साथ बातचीत के लिए सहमत होने पर मजबूर कर दिया। 1993 में, नेल्सन मंडेला को जेल से रिहा कर दिया गया था। लम्बी वार्ता के बाद, 1994 में चुनाव हुए। इस प्रकार, संसदीय चुनाव के साथ सत्ता बहुमत के हाथो में यानि काले लोगो के पास स्थानांतरित हो गई।

दक्षिण पश्चिम अफ्रीका के पूर्व जर्मन उपनिवेश (नामीबिया) दक्षिण अफ्रीका के शासनादेश के तहत आए। जब संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने राष्ट्र संघ का स्थान प्राप्त कर लिया, तो दक्षिण अफ्रीका ने दक्षिण पश्चिम अफ्रीका पर ट्रस्टीशिप का दावा किया, इस प्रकार इस क्षेत्र में रंगभेद फैल गया। यूएन ने दक्षिण अफ्रीकी कब्जे को अवैध घोषित कर दिया और 1967 में संयुक्त राष्ट्र ने क्षेत्र के प्रशासन हेतु नामीबिया के लिए परिषद की स्थापना की। दक्षिण पश्चिमी अफ्रीकी पीपुल्स ऑर्गेनाइजेशन (एसडब्लूएपीओ) द्वारा चलाए गए दीर्घकालीन संघर्ष और संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों के कार्यान्वयन के बाद, दक्षिण पश्चिम अफ्रीका ने स्वतंत्रता प्राप्त कर नामीबिया बना।

बोध प्रश्न 1

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ब) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) स्वतंत्रता आंदोलनों और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के बीच भेद करें।

.....

.....

.....

.....

2) रंगभेद विरोधी आंदोलन की प्रकृति क्या थी ?

.....

.....

.....

.....

8.4 विकासशील दुनिया में राज्य

राजनीतिक सिद्धांत और तुलनात्मक राजनीति में कभी–कभी औपनिवेशिक समाज के रूप में संदर्भित तीसरी दुनिया में राज्य की प्रकृति के सवाल पर चर्चा हुई है। विकासशील दुनिया के राज्यों को समझने के लिए तीन महत्वपूर्ण सैद्धांतिक ढांचे है– उदारवादी, मार्क्सवादी और निर्भरता के आयाम।

उदारवादी सिद्धांत का तर्क है कि राज्य एक तटस्थ एंजेसी है और समाज में प्रतिस्पर्धी समूह के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, किसी भी समूह को राज्य का विशेषाधिकार प्राप्त नहीं है। समाज में विभिन्न समूह राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष अपनी मांगे रखते है। राज्य की एंजेसिया इन सभी मांगों पर विचार करती है और समाज के सामान्य हित में निर्णय लेती हैं। उदारवाद के अंतर्गत कुछ लेखकों का मानना है कि राज्य एजेंसियों पर कुलीन समूहों का प्रभुत्व है। कुलीन समूह कुछ व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर वर्चस्व कायम करते है, जो आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण के कारण नहीं है। उदारवादी सिद्धांत यह मानता है कि लोकतंत्र में कुलीन वर्ग अपने व्यक्तिगत या समूह हितों के लिए शक्ति का उपयोग नहीं करते है। चुनावी मजबूरियां उन्हें सभी समूहों के कल्याण के लिए काम करने हेतु मजबूर करती हैं। तीसरी दुनिया में पश्चिमी अभिजात वर्ग राज्य को नियंत्रित करता है एवं इसे एक साधन के रूप में पारंपरिक कृषि समाज को एक आधुनिक औद्योगिक समाज में परिवर्तित करने के लिए उपयोग करता है।

उदारवादी दृष्टिकोण में दो कमियां है, पहला यह इस तथ्य को मानने से इंकार करता है कि व्यक्तियों की राजनीतिक क्षमता उनके आर्थिक संसाधनों से तय होती है। दूसरा यह समझाने में विफल रहता है कि कुलीन वर्ग अपने संकीर्ण आर्थिक एवं सामाजिक हितों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण समाज के लिए कैसे काम करते है। दूसरे शब्दों में, समाज में वर्ग विभाजन को पूर्णतः नकार के राज्य की कोई भी व्याख्या करना केवल सरलीकरण करना होगा। राज्य समाज में अंतर्निहित है। इसलिए, समाज के संबंध में इसका अध्ययन किया जाना चाहिए।

मार्क्सवादी ढ़ाचे में राज्य न तो एक निष्पक्ष एजेंसी है और न ही एक सामान्य ट्रस्टी है। यह उनके हितो की रक्षा के लिए प्रभावी वर्गो के हितों को व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में, यह प्रभावी वर्गो के हाथों में एक उपकरण है। राज्य समाज का अनुसरण करता है, लेकिन यह पूर्ववर्ती नहीं है।

इसलिए राज्य की प्रकृति समाज में श्रम विभाजन के चरित्र पर निर्भर करती है। दुर्भाग्य से, मार्क्स ने राज्य पर विस्तार से नहीं लिखा है। उन्होंने सक्षिप्त टिप्पणी की। मार्क्स के अनुयायियों ने राज्य के बारे में विस्तार से लिखा है। हांलाकि, इनमें से अधिकांश लेखन विकसित पूंजीवादी देशों से संबंधित है। ये स्पष्टीकरण तीसरी दुनिया के देशों के लिए मान्य नहीं है, जो पूंजीवादी देशों से अलग है। तीसरी दुनिया के देशों का एक औपनिवेशिक अतीत है। राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल करने बाद भी वे पश्चिमी विकसित देशों के द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण के अधीन है। तीसरी दुनिया के देशों की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वहां एक वर्ग का नही बल्कि कई वर्गो का प्रभुत्व होता है।

उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण तीसरी दुनिया के राज्यों की प्रकृति अलग तरीके की होती है। इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे परिधीय राज्य, उत्तर औपनिवेशिक राज्य और अति विकसित राज्य। तीसरी दुनिया के देश औपनिवेशिक शोषण के अधीन थे, जिसने विकास के क्रम को भंग किया और एंकागी विकास को लाया। साम्राज्यवादी शक्तियों का वर्चस्व तीसरी दुनिया के देशों पर जारी रहा यहां तक उपनिवेशों की स्वतंत्रता के बाद भी। विकसित

पश्चिमी देशों और तीसरी दुनिया देशों के बीच संबंधों की प्रकृति के बारे में लेखकों में कोई एकमत नही है।

निर्भरता के सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले कुछ लेखकों का तर्क है कि तीसरी दुनिया के देश राजनीतिक स्वतंत्रता का उपभोग नहीं कर पाते है और उन पर साम्राज्यवादी शक्तियों का वर्चस्व जारी रहता है। इन लेखकों के अनुसार, दुनिया एक एकल पूंजीवादी प्रणाली में एकीकृत है। विकसित पश्चिमी देश विश्व व्यवस्था के मूल में है। औपनिवेशिक काल के दौरान, तीसरी दुनिया के देशों को साम्राज्यवादी देशों द्वारा अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला गया। इस प्रक्रिया के कारण, तीसरी दुनिया विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं के साथ संरचनात्मक रूप से एकीकृत है और विकसित देशों पर निर्भर है।

पूंजीवादी दुनिया में, तीसरी दुनिया सत्व के अनुबंध के रूप में जीवित रहती है जिसे मेट्रोपालिस भी कहते हैं – और जो पूंजीवादी दुनिया की परिधि में स्थित है। इस मॉडल में तीसरी दुनिया के राज्य महानगरीय राजधानी के हाथों में एक उपकरण होता है।

इस धारणा से सहमत होते हुए कि अविकसित देशों में पूंजीवादी देशों का वर्चस्व होता है, निर्भरता सिद्धांत के आलोचकों ने इस तर्क को खारिज कर दिया कि तीसरी दुनिया राज्यों की काई स्वायत्तता नहीं होती। इन लेखकों के अनुसार, राजनीतिक स्वतंत्रता ने तीसरी दुनिया के देशों को नव–औपनिवेशिक अधिकारों द्वारा लगाए गए अवरोधों के भीतर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य का उपयोग करने में सक्षम बनाया है।

8.4.1 विकासशील देशों में राज्य की विशेषताएं

एक संस्थान के रूप में राज्य एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के हिस्से के रूप में अस्तित्व में आया। विकासशील दुनिया में, उपनिवेशिक स्वतंत्रता के कारण से राज्य को मिली विशिष्ट विशेषताओं ने राज्य को एक आकार दिया। कुछ मामलों में उपनिवेश के समय मौजूद सीमाओं को संशोधित किया गया था; कुछ अन्य मामलों में, पूरी तरह से नए राज्यों को तराशा गया। राज्य की क्षेत्रीय सीमाएँ हमेशा राष्ट्र के साथ मेल नहीं खाती; अर्थात्, अक्सर विभिन्न जातीय समूहों से संबंधित लोगों और उपनिवेशों की सीमाओं का पता लगा कर औपनिवेशिक शक्तियों की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें सीमांकित किया जाता था। अफ्रीकी राज्य इस राज्यों की कृत्रिमता को दर्शाने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है। उदाहरण के लिए नाइजीरिया पूरी तरह से एक ब्रिटिश रचना थी। विकासशील देशों की दुनिया में राज्य, राष्ट्र बनने से पहले राज्य बने। यह, काफी हद तक, क्षेत्रीय संघर्षों और राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या के लिए ज़िम्मेदार है। औपनिवेशिक काल के बाद के कई विकासशील देशों ने जातीय और अलगाववादी आंदोलनों का सामना किया। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों और राष्ट्रवादी आंदोलनों की गतिशीलता के कारण पाकिस्तान में अलगाववादी आंदोलन हुए, जो बांग्लादेश के सृजन का कारण बने। औपनिवेशिक सीमाओं की कृत्रिमता, औपनिवेशिक विरासत का प्रभाव और उपनिवेशिक स्वतंत्रता प्रक्रियाओं की गतिशीलता, विकासशील दुनिया में राज्य की जटिलता को स्पष्ट करती है।

विकासशील देशों में राज्य के पास निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं।

1. यह एक अधिक विकसित राज्य होता है;
2. यह प्रमुख वर्गों से प्राप्त स्वायत्तता का आनंद उठाता है;
3. यह महानगरीय पूंजीपति वर्ग के हितों की रक्षा करते हैं।

8.4.2 अति विकसित राज्य

पश्चिमी पूँजीवादी देशों में, आधुनिक राष्ट्र–राज्य समाज की आंतरिक गतिशीलता के कारण उभरा है। यह पूंजीवाद के लिए ऐतिहासिक परिवर्तन के दौरान अस्तित्व में आया। उभरते पूँजीपति वर्ग ने राष्ट्र–राज्य स्थापित करने का बीड़ा उठाया। तीसरी दुनिया में राजनीतिक संस्थानों में बदलाव की प्रेरणा आहर से आई। औपनिवेशिक काल के दौरान तीसरी दुनिया पर पश्चिमी पूँजीवादी देशों का प्रभुत्व था। औपनिवेशिक शासकों ने अपनी छवि बनाए रखने के लिए राजनीतिक संस्थानों को बनाया था ताकि उपनिवेशों के मूल वर्गों पर हावी हो सकें और उनका आर्थिक शोषण कर सकें।

इन कार्यों को करने के लिए तथा उपनिवेशों को नियंत्रित करने के लिए औपनिवेशिक शासकों ने एक विस्तृत कानूनी–संस्थगत ढ़ांचा खड़ा किया। इन संस्थानों को संचालित करने वाली सेना और नौकरशाही ने औपनिवेशिक शासकों के मामलों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता के बाद भी विस्तृत संरचना अस्तित्व में रही। इस राज्य की दो मुख्य विशेषताएँ हैं : एक, कि यह स्थानीय वर्गों द्वारा गठित नहीं है और न ही इसे सामाजिक परिवर्तन के कारण स्थापित किया गया है; और दूसरा, कि मूल शासक वर्गों का राज्य पर कोई नियंत्रण नहीं था।

राज्य उस समय और स्थान से बहुत आगे है जिसमें यह स्थित है। इसलिए विकासशील देशों में नौकरशाही और सेना ने एक केंद्रीय स्थान हासिल कर लिया। पश्चिमी पूँजीवादी देशों में नौकरशाही की पूरक भूमिका निभाती है। यह प्रमुख वर्ग का एक साधन है, जबकि विकासशील देशों में इसका एक केंद्रीय स्थान है और इसे प्रमुख वर्गों से स्वायत्तता प्राप्त है।

एक अति विकसित राज्य लोकतांत्रिक संस्थानों को कमज़ोर करता है। यहाँ तक कि उन विकासशील देशों में भी जहाँ लोकतांत्रिक संस्थाएँ मौजूद हैं और निर्वाचित प्रतिनिधि राज्य एजेंसियों को नियंत्रित करते हैं, नौकरशाही राज्य पर अपना प्रभुत्व बनाए रखती है। हालांकि, यह नेताओं के साथ लीग में नियंत्रण रखता है।

लोकतांत्रिक नियंत्रण वाले देशों में राजनेता केंद्रीय स्थान पर अधिकार रखते हैं। राजनेता समर्थन जुटाने के लिए लोगों की मांगों को व्यक्त करते हैं। वे लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए नीतियाँ बनाते हैं। इस प्रक्रिया में राजनेता राजनीतिक संस्थानों को वैधता प्रदान करते हैं। हालांकि, नौकरशाही की प्रक्रियाओं और नियंत्रणों द्वारा हुकुमत को किनारे कर दिया जाता है। राजनेताओं को राज्य और लोगों के बीच दलालों के रूप में बदल दिया जाता है।

8.4.3 स्वायत्तता

पश्चिमी देशों में सुघड़ प्रमुख वर्ग का प्रभुत्व है। सभी पश्चिमी देशों में पूँजीपति वर्ग प्रमुख वर्ग है। विकासशील दुनिया कई प्रमुख वर्गों के अस्तित्व से अंकित है। ज़मींदार वर्ग, यानी, तीसरी दुनिया को नियंत्रित करते महानगर के स्थानीय पूँजीपति।

इन सभी वर्गों से मिलकर बने गठबंधन राज्य पर हावी होते हैं। इस गठबंधन को ऐतिहासिक गुट कहा जाता है। ऐतिहासिक गुट इसीलिए उभरते हैं क्योंकि विकासशील देशों के समाज के गठन में पूँजीवादी और पूर्व–पूँजीवादी दोनों के सामाजिक संबंधों के तत्व शामिल होते हैं। पूँजीवादी वर्ग समाज में पूर्व–पूँजीवादी संबंधों के खिलाफ लड़ने में कमज़ोर और अक्षम साबित होते हैं।

पूँजीवादी वर्ग कमज़ोर होता है क्योंकि वह आर्थिक गतिविधियों पर सीमित नियंत्रण रखता है। आर्थिक उत्पादन का बड़ा भाग या तो महानगरीय पूँजीपति वर्ग द्वारा या स्थानीय भूस्वामियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। कोई भी वर्ग इतना मज़बूत नहीं होता है कि राज्य पर नियंत्रण कर सके।

चूंकि एक भी वर्ग प्रभावी नहीं है, इसलिए राज्य ऐतिहासिक गुटों के विभिन्न वर्गों के बीच रिश्तों को विनियमित करने के लिए स्वायत्तता अधिगृहित कर लेता है। विकासशील देशों में राज्य, प्रमुख स्थानीय वर्गों और महानगरों के पूँजीपति वर्ग के हित में पूँजीवादी उत्पादन प्रक्रिया को पुनः स्थापित करने के लिए व्यापक आर्थिक संसाधनों को उपलब्ध करा कर अपनी स्वायत्तता का समर्थन करता है।

8.4.4 महानगर का नियंत्रण

विकासशील देशों में राज्य को विदेशी शक्तियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। अर्थव्यवस्था की अल्पविकसित प्रकृति और सत्तारूढ़ अभिजात्य वर्ग की प्रकृति राज्य को विदेशी सहायता और पूँजी पर निर्भर कर देती है। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग राज्य और विदेशी पूँजीपतियों के बीच मध्यस्थों का व्यवहार कर लाभ एकत्र करते हैं। यह प्रक्रिया विकास में मदद नहीं करती है। शासित और शासकों के बीच तथा अमीर और गरीबों के बीच की खाई चौड़ी हो जाती है। यह तर्क अतिशयोक्ति पूर्ण होगा कि विकासशील दुनिया में राज्य पूर्ण रूप से साम्राज्यवादी शासकों के नियंत्रण में आ जाता है। औपनिवेशिक प्रभुत्व से स्वतंत्रता मिलने से साम्राज्यवादी शक्तियों के पूँजीपति वर्ग का तीसरी दुनिया पर सीधे नियंत्रण बनाए रखने की गुंजाइश को खत्म कर दिया है। हालांकि, यह विकासशील दुनिया के राज्यों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। राष्ट्रीय सीमाओं को भंग करके अति–विकसित तीसरी दुनिया के राज्य, वैश्विक बाज़ार के विकासशील दुनिया में प्रवेश करने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाते हैं। प्रौद्योगिकी और निवेश की सुविधाओं को शामिल करके राज्य, तीसरी दुनिया और वैश्विक बाज़ार का एकीकरण करता है। राज्य, सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग, बाहरी दुनिया के साथ कम शक्ति और करने की क्षमता के साथ मोल भाव करते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।
ब) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) मार्क्सवादी विश्लेषण में, विकासशील देशों में राज्य अपनी स्वायत्तता कैसे बनाए रखता है?

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 सारांश

उपनिवेशवाद का उदय दुनिया के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है क्योंकि इसने दुनिया के विभिन्न हिस्सों के बीच संबंधों को बदल दिया। औपनिवेशवाद से स्वतंत्रता और उपनिवेश का साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्ष ने जिसे जन्म दिया उसे तीसरी दुनिया कहा जाता है। ये राष्ट्रवादी, साम्राज्यवाद–विरोधी आंदोलन अपनी विशिष्टताओं के साथ प्रत्येक देश में भिन्न थे। यह औपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप और औपनिवेशिक समाजों पर उनके प्रभाव के कारण था। यहाँ ऐसे उपनिवेश भी थे जो कि संवैधानिक प्रक्रियाओं और सुधारों के माध्यम से स्वतंत्र हुए; और कुछ ऐसे थे जिन्हें सशस्त्र मुक्ति संघर्षों के माध्यम से स्वतंत्रता हासिल हुई। कुछ ने अंतरराष्ट्रीय दबावों और राष्ट्र संघ और संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों के हस्तक्षेप के कारण स्वतंत्रता प्राप्त की। हालांकि, इन मतभेदों पर अधिक ज़ोर नहीं दिया जाना चाहिए। व्यवहारिक रूप से, सभी उपनिवेशों ने औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा हिंसक उत्पीड़न का अनुभव किया। यहाँ तक कि उन देशों के लिए भी जिन्हें संवैधानिक सुधारों के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त हुई, यह कहना गलत होगा कि उन्के संघर्ष हमेशा शांतिपूर्ण थे। औपनिवेशिक शक्तियों की घुसपैठ के कारण कुछ उपनिवेशों में सशस्त्र संघर्ष अपरिहार्य हो गया।

तीसरी दुनिया के राज्य काफी हद औपनिवेशिक निर्माण इस अर्थ में हैं कि उनकी सीमाएँ, उनके शासन करने का तरीका औपनिवेशिक नीतियों से बहुत प्रभावित हैं। तीसरी दुनिया में प्रमुख वर्गों की प्रकृति पर कई भिन्न विचार हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि तीसरी दुनिया में मूल पूंजीवादी वर्ग का प्रभुत्व है। लेकिन एक प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि तीसरी दुनिया में कोई प्रमुख वर्ग सुनिर्मित नहीं है। विभिन्न वर्गों का अस्पष्ट गठबंधन तीसरी दुनिया पर प्रभावी है।

तीसरी दुनिया राज्य का प्रमुख वर्गों के साथ अपने संबंधों के संदर्भ में भी विश्लेषण किया जाता है। तीसरी दुनिया पर अधिकांश लेखकों का तर्क है कि राज्य को उन शासक वर्गों से स्वायत्तता प्राप्त है जो सामाजिक संरचना द्वारा सीमांकित है।

कुछ ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के कारण, तीसरी दुनिया राज्य ने एक और विशिष्ट चरित्र प्राप्त कर लिया। औपनिवेशिक शासकों ने उपनिवेश पर अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए अत्यधिक केंद्रीकृत राज्य प्रशासन तंत्र बनाया। इस प्रकार राज्य प्रशासनिक तंत्र ऊपरी व्यवस्था द्वारा थोपा गया और यह कभी आंतिरक सामाजिक गतिशीलता से बाहर नहीं निकल पाई। इसलिए तीसरी दुनिया राज्य समाज के अनुरूप नहीं है, इसकी समाज के साथ बड़े फलक पर यदि तुलना की जाए तो या तो यह उन्नत है या अति–विकसित है।

तीसरी दुनिया को विभिन्न कोणों से देखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि तीसरी दुनिया राज्य एक अति–विकसित, उत्तर–औपनिवेशिक राज्य है, जिसको

शासक वर्ग से स्वायत्तता प्राप्त है। दूसरे शब्दों में, यह तीसरी दुनिया के जटिल सामाजिक गठन का उत्पाद है।

8.6 संदर्भ

ए.वंदना, (1995). थ्योरी ऑफ इंटरनैशनल पॉलिटिक्स. विकास पब्लिशिंग कं., नई दिल्ली।

सीज़र, एमी. (1972). डिस्कोर्स ऑन कोलोनिअलिज़म, मंथली रिव्यू प्रेस, न्यूयार्क।

दुरा, प्रसन्नजीत एडस्. (2004). डीकोलोनाइज़ेशनः परस्पेक्टिवज़ फ्राम नाओ एंड़ देन. रौतलऐज, न्यूयार्क।

मैनोर, जेम्स. (1991). रीथिंकिंग थर्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स्. लौंगमैन, लंदन।

मेलकोट, एस.रामा. (1992). इंटरनैशनल रिलेशनस्; स्टर्लिंग पब्लिशर प्रा. लि., नई दिल्ली।

नकरूमाह, क्वामें. (1965). नीओ–कोलोनिअलिज़मः दी लास्ट स्टेज ऑफ इंपीरिअलिज़म, इंटरनैशनल पब्लिशरस्, न्यूयार्क।

पूल एंड टार्डऑफ. (1981). थर्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स्ः ए कम्पैरेटिव इंट्रोडक्शन, गैमोच–मैक्मिलन, लंदन।

रोदरमुंड, डेटमार, (2006). दी रोतलऐज कम्पैनियन टु डीकोलोनाइज़ेशन. रोतलऐज, न्यूयार्क।

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) दोनों उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्ष हैं, किन्तु 'स्वतंत्रता आंदोलनों' ने संबंधित देशों के लोगों के लिए केवल राजनीतिक शक्ति के हस्तांतरण की मांग की है। दूसरी ओर मुक्ति आंदोलनों ने न केवल विदेश शासन के खिलाफ, बल्कि मौजूदा सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी, जो अन्याय, अलोकतांत्रिक और शोषण का समर्थक थे।

2) यह मूल रूप से एक अहिंसक आंदोलन था जो पूरे विश्व में प्रगतिशील तबके द्वारा समर्थित था।

बोध प्रश्न 2

1) विकासशील देशों में राज्य अपनी स्वायत्तता बनाए रखने के लिए, स्थानीय प्रमुख वर्गों और महानगर के पूंजीपति वर्ग के हित में पूंजीवादी उत्पादन प्रक्रिया को फिर से शुरू करने हेतु बृहत आर्थिक संसाधनों को तैनात कर देता है।